प्रातः क्लास 28/11/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझाते हैं। एक तो बाप समझाते हैं। जब यहाँ बैठते हो या देखते हैं, चलते हो तो बुद्धि में यह आता है कि यह सुप्रीम बाप है, टीचर भी है, सुप्रीम सद्गुरु भी है। यह दिल में याद आना चाहिए। सिर्फ शिवबाबा भी नहीं, उनका ऑक्युपेशन भी जानना चाहिए। यह बुद्धि में आने से भी पक्का निश्चय हो जावेगा; क्योंकि यह तो जानते हो सद्गुरु शान्तिधाम भी ले जाते हैं, टीचर भी हैं, सुखधाम भी ले जाते हैं। बाबा तो है ही। भक्तिमार्ग में उनको और ही जास्ती याद करते हैं। सतयुग में कोई याद नहीं करते; क्योंकि वहाँ तो बाप का सभी कुछ मिला हुआ है। तो उनको याद करने की दरकार ही नहीं। जन्म-जन्मांतर लौकिक बाप की तो याद रहती ही है; क्योंकि नया-2 जन्म मिलता है। बाप समझाते हैं तुम हो साहबज़ादे और साहबज़ादियाँ। सच्चे-2 साहब के सन्तान। सभी ब्रदर्स ठहरे सभी साहबज़ादे, तो ज़रूर सभी को हक मिलना चाहिए; परन्तु पढ़ते नहीं हैं तो सभी को एक जैसे हक मिल न सके। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही हक मिलता है। राजधानी स्थापन हो रही है ना। भल गाँधी जी रामराज्य स्थापन करने का पुरुषार्थ करते थे। यह भी उनकी महिमा करते हैं। बाकी वह गाँधी ऐसे नहीं कहते थे– मैं राम-राज्य स्थापन करूँगा। वह चाहते थे रामराज्य चाहिए। ऐसे नहीं समझता मैं भी उस रामराज्य में राम बनूँ या स्वर्ग में श्री कृष्ण बनूँ। नहीं, उनको बनने का ही नहीं है, तो यह ख्याल भी कैसे आए। तुमको तो निश्चय है ना। वह था हद का बापू जी। यह है बेहद का बापू जी। उनसे कोई वर्सा मिल न सके। यह तो है निराकार सो भी बेहद का बाप। वह गाँधी भी रामराज्य का अर्थ कुछ नहीं समझते थे। शान्ति का राज्य चाहता था। वह तो समझते हैं स्वर्ग को लाखों वर्ष चाहिए। फिर भी उनके लिए भारतवासियों को बहुत ही रिगार्ड था। सभी को नहीं हो सकता। तुमको तो बाप के लिए सभी को रिगार्ड बिठाना है। सभी कहते हैं हम ब्रदर्स हैं, तो वर्सा ज़रूर मिलना चाहिए। भल बाप अक्षर कहते हैं; परन्तु जानते कुछ भी नहीं हैं। बाप आते हैं या उनके पास जाना होगा, कुछ भी पता नहीं है; क्योंकि वह सभी हैं भक्तिमार्ग में। तुम्हारी तो है नॉलेज। भक्ति को नॉलेज नहीं कहा जाता। वह है जिस्मानी नॉलेज। यह फिर है रूहानी नॉलेज। नॉलेज में हमेशा एम-ऑबजेक्ट होती है। भक्तिमार्ग में एम-ऑबजेक्ट कोई है नहीं कि भगवान से क्या मिलेगा। तो ज़रूर भगवान को आना पड़े, जो अपना परिचय दे ले जाना पड़े। बारात है ना। बच्चे समझते हैं सभी को साथ में ले जावेंगे। अभी संगमयुग है तो ज़रूर नई दुनिया में जाने का है। बच्चों को यह निश्चय है हम नई दुनिया में जाने वाले हैं। गाँधी का एम-ऑबजेक्ट कोई ऐसा नहीं था। वह तो ज़रूर फ़ॉरेन राज्य को उड़ाने की कोशिश करते थे। फ़ॉरेन राज्य नहीं चाहता था। अभी तुम जानते हो यह तो बेहद का फ़ॉरेन राज्य है। सारी दुनिया पर रावण राज्य है। भल क्रिश्चियन का राज्य था; परन्तु आपस में फूट होने कारण राज्य गंवाये दिया। बाप ने समझाया है वह बलवान बहुत हैं। अगर वह आपस में मिल जायें तो सारी दुनिया पर राज्य कर सकते हैं; परन्तु बाप समझाते हैं बाहुबल से कोई भी विश्व का राज्य पा नहीं सकता। भारत का प्राचीन योगबल तो नामी-गिरामी है। यह भी समझते हो क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले हेविन था। मुसलमान भी समझते हैं बहिश्त था; परन्तु कब था, किसने स्थापन किया, वह कुछ भी नहीं जान(ते)। क्रिश्चियन लोग फिर भी कहते हैं पैराडाइज़ था। भारतवासियों को तो कुछ भी पता नहीं है। वह फिर भी तमो-बुद्धि है। यह तो बिल्कुल ही तमोप्रधान बुद्धि है ना। भारतवासियों की बुद्धि और उन्हों की बुद्धि में कितना रात-दिन का फर्क है! कितनी उन्हों की महीन बुद्धि है बॉम्ब्स आदि बनाने की! विश्व में जिस्मानी मौत लाने लिए कितनी युक्ति रची हुई है ड्रामा के प्लैन अनुसार। बच्चे जानते हैं बाप बैठते हैं उनके सामने सभी बच्चे हैं। यह तो किसको भी याद नहीं करेंगे ना। किसको दृष्टि देंगे; क्योंकि बाप इनमें है ना। कहेंगे– अच्छा, तुम ओपनिंग शिरोमणी(सेरमनी) कराते हो मुरार जी देसाई द्वारा। तो बच्चों के कल्याण लिए कोशिश करेंगे दृष्टि देने की। फिर भी कहेंगे ड्रामा होगा तो हो सकता है सा॰ हो जाये। बाबा यह अनुभव बताते हैं। इनको तो याद में बैठना ही है। बाबा दृष्टि देने वाला भी साथ में है। तो कोशिश

करते हैं, जैसे बहुतों को ब्रह्मा का, कृष्ण का सा॰ होता है ना। फिर भी बाप कहते हैं ड्रामा में होगा तो। कृष्ण का तो पुजारी है ही। तो कृष्ण का राज्य मिलता है थ्रू ब्रह्मा। देवी-देवताओं का राज्य तो ब्रह्मा द्वारा ही होता है। तो सा॰ भी हो सकता है। ऐसे नहीं कहते मैं उस बच्चे को दृष्टि देता हूँ। उनकी सोल को याद करेंगे। उनको ब्रह्मा का भी सा॰ हो, फिर कृष्ण का भी सा॰ हो। तुम तो जानते हो ना हम वैकुण्ठ में जाने वाले हैं। वैकुण्ठ में प्रिन्स-प्रिन्सेज़ बनेंगे। तो सा॰ भी वही होगा। आगे चल तुम्हारा नाम (नि)कलता जावेगा। चित्र में भी है कैसे दो बिल्ले आपस में लड़ते हैं, मक्खन बन्दर खा लेते हैं। अभी बन्दर आदि की तो बात नहीं। यूँ तो समझाते हैं यह भी बन्दर थे ना। तुम सभी बन्दर बुद्धि थे। अभी फिर तुम मक्खन खाते हो देवता बनकर। बन्दरों की सेना भी बरोबर है। तुम रावण पर जीत पाते हो। राम तो बाप को ही कहा जाता है। बाप समझाते हैं कैसी सेना ली है। देवता बना देते हैं। स्वर्ग की स्थापना कर नर्क का विनाश करा देते हैं। उनमें (ओपनिंग करने वाले) तो ज्ञान है नहीं। फिर भी अगर ड्रामा में होगा तो सा॰ होगा। अक्सर करके ब्रह्मा और कृष्ण का ही सा॰ होता है। ऐसे नामी-गिरामी होते हैं तो बाप भी अटेन्शन देते हैं। बाप तो ऐसे बैठे रहते हैं बच्चों को जैसे दृष्टि देते रहते हैं। बाप(पाप) कट जायें। वैकुण्ठ के मालिक बन जायें। तुम भी समझते हो हम वैकुण्ठ के मालिक बनने वाले हैं। बच्चों को खुशी तो है ना; परन्तु खुशी तब रहे जबकि विचार-सागर-मंथन करते रहें। देहली में तार जानी है उनको भी करेक्ट करना होता है। वह लोग तो यह समझते नहीं हैं इस लड़ाई के अन्दर पीस मर्ज़ है। अक्षर ऐसी लिखनी है जो समझें इस लड़ाई के बाद ही पीस स्थापन होनी है। तुम बच्चे जानते हो इसमें पीस है। विनाश के बाद ही पीस स्थापन होनी है। यह भी समझते हो शान्तिधाम अलग है, सुखधाम अलग है। यह दुखधाम अलग है। यह भी समझाना पड़े। भल हैं तो शूद्र। ब्राह्मण नहीं हैं; परन्तु आजकल उनकी बड़ी महिमा है। उनके आने से आवाज़ अच्छा होगा। अखबार में भी पड़ेगा। बड़े-2 आदमी का आवाज़ भी अच्छा होता है। यह जो ब्रह्माकुमारियों की इतनी ग्लानि होती है, जिस कारण ही अत्याचार आदि होते हैं। वह कैसे निकले उसके लिए यह युक्तियाँ हैं। कल्प2 यह युक्तियाँ निकलती हैं। कहते हैं गरीबों को भी यह नॉलेज देना चाहिए। बाप भी कहते हैं मैं गरीब निवाज़ हूँ; परन्तु साहुकारों के आधार से ही गरीबों का भी बेड़ा पार होगा ना। गरीबों के कारण ही बड़ों-2 को बुलाना होता है। वह अपना ओपनिंग देंगे तो मनुष्य समझेंगे, आवा(ज़) होगा। गरीबों का कोई सुनता थोड़े ही है। साहुकारों का आवाज़ अच्छा होता है। यह समझाना है पवित्रता से करैक्टर्स भी सुधरते हैं और फिर मनुष्य सृष्टि भी बढ़ेगी नहीं। मुठ भर हो जावेगा। अखबार वाले भी डालेंगे कि ज्ञान यह समझाया गया। यह विनाश ही पीस का निमित्त कारण है। जैसे कोई मरता है तो सन्नाटा हो जाता है। यह भी ऐसा सन्नाटा हो जावेगा। सन्नाटा माना ही शान्ति। यहाँ कितने ढेर मनुष्य हैं और सतयुग में बहुत थोड़े होंगे। तो यह समझाना पड़ता है। बड़े-2 आदमी का अखबारों में भी डालेंगे। टाइम्स ऑफ इंडिया वाले तो कहते हैं हमको फरमान मिला हुआ है ब्रह्माकुमारियों का लेख, पैसे आदि मिलें तो भी न डालना। ऐसी कुछ ऑर्डर गवर्नमेन्ट की गई है। मायावी गवर्नमेन्ट तो है ना। पाण्डव गवर्नमेंट की तो है पाँच पाण्डव। तुम पाण्डव सेना वा पाण्डव सम्प्रदाय हो। पाण्डव और कौरव सेना गाई हुई है। वह है जिस्मानी सेना, तुम हो रूहानी। तो बाप ने समझाया यहाँ बैठे हो वा चलते-फिरते हो यह बुद्धि में याद रहे बाबा हमारा सुप्रीम बाप है, टीचर, गुरु है। याद करने से ही पाप कट जावेंगे। कहते भी हैं वह नॉलेजफुल है। जानी-जाननहार है। फिर भी कह देते ठिक्कर-भित्तर में है। बिल्कुल ही बेसमझ बुद्धि हैं। तुम भी बेसमझ थे ना। अभी समझदार बन विश्व के मालिक बनते हो। अभी विश्व में ही दुख, फिर विश्व में ही सुख-शान्ति होगी। नई विश्व में ज़रूर सुख, पुरानी विश्व में ज़रूर दुख होगा। पुराने मकान में दुख न हो तो नया बनावें ही क्यों। यह है बेहद की बात। यह पुरानी पतित दुनिया रहने लायक नहीं है। विषियस को नालायक कहेंगे ना। काम का भूत, देहअभिमान का

..... भूत कितना है। इन भूतों पर भी विजय पानी होती है याद की बल से। याद नहीं करेंगे तो विजय कैसे पावेंगे। लिखते हैं बाबा हम काला मुँह कर दिया। अभी आप कृपा करो, क्षमा करो। अभी इसमें क्षमा की तो बात ही नहीं। तमोप्रधान काम करने से तुम ही गिरते हो। वह खुशी, वह याद की यात्रा रह न सके। अपने पैर पर आपे ही कुल्हाड़ी मारते हो। बाप सभी को आशीर्वाद देते हैं क्या? वह तो बात ही नहीं। संगदोष में आकर अथवा माया के वश होकर कुछ कर लिया, अपने ही पैर पर कुल्हाड़ा मारा। काम चिक्षा पर बैठ काले हो गए। बाप भी कहते हैं हमारे बच्चे काम चिक्षा पर बैठ काले हो गए हैं फिर उनको ज्ञान-चिक्षा पर बिठाता हूँ। सम्मुख आते हैं तो समझाना पड़ता है ज्ञान चिक्षा पर बैठो तो ऐसे गोरा बनो। इस जन्म में ही पढ़ाई करनी है। जो चले गए हैं वह फिर भी संस्कार ले गए हैं तो फिर आकर ज्ञान लेंगे। जितना देरी से फिर उतना बड़े हो न सकेंगे, जो ज्ञान आये लेवें। कोई-2 छोटे बच्चियों का झट अटेन्शन जाता है। शिवबाबा कहने लग पड़ती हैं। आत्मा में संस्कार है ना। इसलिए बाप को याद करते हैं। बाप कहते हैं छोटे बच्चों को भी बाप से वर्सा लेने का हक है। तुम सभी को पैगाम देते रहो। अखबारों द्वारा तुम्हारा पैगाम जावेगा। बदनामी भी अखबारों से हुई है। बड़ों-2 को बुलावेंगे तो अखबारों में डालेंगे। तुम्हारे पास ब्लॉक भी तैयार रहनी चाहिए। प्रेस वाले मांगे तो तैयार रखें हो। नीचे लिखत भी लिखनी है। डीटी वर्ल्ड सावरन्टी गॉड फादरली बर्थराइट। तो यह भी गोया पैगाम मिला। शुरू-2 में विलायत तक अखबारों द्वारा आवाज़ गया था– एक जवाहरी है जिसको 16,108 रानियाँ चाहिए, जिसमें इतने मिली हैं। तो फिर अखबारों द्वारा ही तुम्हारा नामाचार भी होगा। बाकी अपन को आत्मा समझना, यह मेहनत इस समय की है, जबकि पावन बनकर घर जाना है। योगबल से तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान कितना बलवान बनते हो। इसमें फेल होते हैं तब तो कहते हैं बाबा आज हमसे यह हो गया। बहुत गिरते हैं। भाकी भी पहन लेते हैं। फिर कोई सच लिखते हैं, यह हमसे भूल हुई। कोई सच नहीं बताते। यहाँ बाप दादा दोनों इकट्ठे हैं ना। रिपोर्ट्स आती हैं। ऐसे नहीं बाप जानी–जाननहार है। नहीं, वह भी सुनते हैं, यह भी सुनते हैं। फिर लिखते हैं बाबा कि अगर भूल करेंगे तो ऊँच पद नहीं पा सकेंगे, अपने पाँव पर कुल्हाड़ा मारते हो। जो जैसा करेंगे वैसा पावेंगे। यह बड़ी समझ की बातें हैं। तुमको कहते हैं यह इतना खर्चा कैसे होता है, पैसे कहाँ से आते हैं? उनको यह पता नहीं यह है ईश्वरीय परिवार, तो ज़रूर उन्हों पास पैसे होंगे ना। साकार परिवार है, तो आपे ही खर्च करेंगे। शिवबाबा तो पैसे ले नहीं आते हैं। तुमको अपने-2 पुरुषार्थ से दैवी स्वराज्य स्थापन करना है। इसमें लड़ाई आदि की कोई बात नहीं। इस सहज राजयोग से पैराडाइज़ कैसे स्थापन होता है यह समझना है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो सर्वशक्तिवान बाप से शक्ति मिलेगी। पवित्र बनने से मुक्तिधाम चले जावेंगे और फिर नॉलेज से जीवनमुक्ति में। यह भी पैगाम देना है। जो कुछ कल्प पहले किया है वही मत बाप देते रहते हैं। बहुतों को नींद में स्वप्न भी आते हैं। ऐसा जब देखा जाता है तो समझाया जाता है। बड़े आदमी के पीछे ढेर आ जाते हैं। म्युज़ियम है विहंग मार्ग की सर्विस। सेन्टर खोलकर बैठ जाओ, फिर कोई आवे न आवे, वह है चींटी मार्ग। यह सहज है। जितना जास्ती भभका उतना जास्ती आते हैं। मुख्य दिल्ली कैपिटल में ही घेराव डालना है। बड़ों का आवाज़ निक(ले)गा। फिर गरीबों की भी सर्विस करने जाना है। चित्र आदि सामग्री पूरी चाहिए। ड्रामा के प्लैन अनुसार कशिश की जाती है। कपड़े पर एक्युरेट चित्र छप जाये तो विलायत में भी बाबा भेज सकते हैं। एक ट्रिप में ही तुम लखपति बन जावेंगे। यह ऐसी चीज़ है। वह गीताएँ कैसे बेचकर आते हैं। महऋषि आदि का इस समय कितना मान है। अभी उन्हों को समझने का टाइम नहीं है। अभी अगर आ जायें तो सभी कहेंगे इन्हों को ब्रह्माकुमारियों का जादू लगा है। उन्हों के सभी शिष्य आदि अभी नहीं आवेंगे। अभी नहीं। यह पिछाड़ी में आवेंगे। ड्रामा अनुसार जो कुछ सर्विस कर रहे हो वह ठीक है। अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।